अध्याय-6

धर्म एवं जादू

हमने पूर्ववर्ती अध्याय में धर्म के साथ जादूई विचारों के अस्तित्व एवं धार्मिक कर्मकाण्डों और संस्कारों में जादू की उपस्थिति का उल्लेख किया है। अतः यह जानना आवश्यक है कि जादू प्रकृतितः क्या है? इसका उद्गम स्रोत क्या है? धर्म से यह कैसे एवं किस रूप में सम्बन्धित है? जादू कितने प्रकार का होता है? जादू क्या धर्म का अविभाज्य अंग है? ये ऐसे प्रश्न हैं जिनका सम्यक् उत्तर इस अध्याय में प्रस्तुत किये गये कलेवर के आधार पर प्राप्त किया जा सकता है।

आदिम काल से ही मानव को यह आभास होता रहा है कि दृश्य एवं ज्ञात जगत् से परे सजीव या निर्जीव ऐसी कोई अज्ञात शक्ति अवश्य है जो उससे महान् और शक्तिशाली है तथा सम्पूर्ण ब्रह्माण्डीय एवं सांसारिक प्रघटनाओं पर अपना नियन्त्रण रखती है। अतः उसमें इस अदृश्य एवं अज्ञात शक्ति को जानने और समझने का कौतूहल एवं जिज्ञासा चिरन्तन काल से पाई जाती रही है। यही कारण है कि इस अदृष्ट एवं अज्ञात शक्तियों के प्रति मानव समाज में भिन्न-भिन्न प्रकार की परिकल्पनाएँ एवं मान्यताएँ पायी जाती हैं। जब किसी प्रघटना का इन्द्रिय ग्राह्य जगत् के कारणों से कोई प्रत्यक्ष सम्बन्ध स्थापित नहीं किया जा सकता अथवा वह पूर्णतया अनपेक्षित प्रतीत होती है तो उसे अलौकिक शक्ति मान लिया जाता है। इस अलौकिक शक्ति से मानव जिस प्रकार के सम्बन्धों की कल्पना करता है वे धर्म अथवा जादू या इनके बीच की किसी स्थिति का निर्माण करने में सहायक सिद्ध होते हैं। इस अनुभूति के द्वारा जनित विश्वास और मान्यताएँ दो भिन्न दिशाओं में विकसित हो सकती हैं। यदि मानव अपनी असमर्थता स्वीकार कर इन अलौकिक शक्तियों के समक्ष नतमस्तक होकर उनकी आराधना करने लगता है और अपने को उस पर आश्रित मानकर उसके प्रति समर्पित हो जाता है तब इसमें जिस अनुभूति की सृष्टि होती है उसे धर्म कहा जाता है। इसके विपरीत जब इन अलौकिक शक्तियों को वशीभूत और नियन्त्रित करने का प्रयास किया जाता है तब इसे जादू कहा जाता है।

धर्म और जादू का प्रभाव हम किसी भी आदिम व आधुनिक, विकसित व अविकसित समाज व संस्कृति में देख सकते हैं। कोई ऐसा समाज व संस्कृति दृष्टिगोचर नहीं होती है जिसमें इन दोनों पक्षों (धर्म और जादू) की उपस्थिति लक्षित न हो। यहाँ तक की आज के उन्नत धर्म वाले समाजों में भी जादूई क्रियाओं की उपस्थिति लक्षित होती है। भारत के ग्रामीण एवं नगरीय दोनों ही क्षेत्रों में धार्मिक क्रियाओं के साथ टोटके और टोने भी होते रहते हैं। इसी प्रकार आदिम संस्कृतियों में भी यहाँ जादूई क्रियाओं का प्राबल्य है, हम कई धार्मिक क्रियाओं को उनके मौलिक रूप में सम्पादित होते देख सकते हैं।

अतएव यह कहना असत्य नहीं होगा कि दिन-प्रतिदिन के सामाजिक जीवन के क्षेत्र में धर्म और जादू दोनों का ही समान महत्व है और दोनों ही जीवन के विविध पक्षों का पृष्ठपोषण करने में सहायक सिद्ध होते हैं। फिर भी यहाँ हमें यह स्वीकार करना ही होगा कि जिस समाजों व संस्कृतियों में विज्ञान अपेक्षाकृत अविकसित होता है उनमें धर्म एवं जादू की प्रधानता विकसित समाजों व संस्कृतियों की अपेक्षा अधिक होती है। विज्ञान और वैज्ञानिक उपागम प्रघटनाओं की व्याख्या तर्कणापरक करने लगते हैं और इस प्रकार अतर्कणापरक विधियों की आवश्यकताओं को कम कर देते हैं।

जादू का उद्गम स्रोत–

यह समस्या कि जादू की उत्पत्ति कैसे हुई है, क्या जादू का विकास स्वतः स्वतन्त्र रूप से

हुआ है अथवा इसका विकास धर्म के गर्भ से हुआ है? इस सन्दर्भ में यह कहा जा सकता है कि जादू धर्म का अवशेष है, यह उसका विकृत रूप है। धर्म का जब अपकार्ष या ह्रास होता है तब जादू का उद्भव होता है। फीटिशवाद के समान यह धर्म का विकृत रूप है। मनुष्य जो कार्य पूजा व प्रार्थना द्वारा नहीं कर सकता है, वह छद्म ढंग से कर सकता है। सिद्धान्ततः ह्रासोन्मुख धर्म का एक सामान्य लक्षण उसमें अन्तर्विष्ट अन्धविश्वासों से सम्बन्धित विश्वास एवं व्यवहार के होतें हैं। परन्तु इससे यह सिद्ध नहीं होता है कि जादूई धारणाएँ अपने अस्तित्व के लिए धार्मिक अवधारणाओं पर निर्भर होती हैं। यह सम्भव है कि उनका उद्भव स्वतन्त्र ढंग से हुआ हो, यद्यपि धर्म से उनका अटूट साहचर्य होता है और तथ्यतः आरम्भिक धर्म के साथ जादू के स्वतन्त्र अस्तित्व एवं इन दोनों के भिन्न स्वरूप का भी आभास होता है और इसलिए धार्मिक अपकार्य की स्थिति की बात अतर्कणपरक प्रतीत होती है।

कतिपय मानवशास्त्रियों ने विकास के इस क्रम को उलटकर एक दूसरा युक्तियुक्त तर्क देते हुए जादू से धर्म क उत्पत्ति को सिद्ध किया है। मानवशास्त्रियों की इस श्रेणी में यहाँ फ्रेजर का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उसने अपनी पुस्तक *दि गोल्डन बी* के द्वितीय संस्करण में धर्म की उत्पत्ति के मूल में जादू की असफलता को सिद्ध किया है। उनका मन्तव्य है कि जादू धर्म का उद्गम स्रोत है और वह जादू की असफलता का परिणाम है। उसके अनुसार आदिम काल में लोग जादू की सहायता से प्राकृतिक शक्तियों को नियन्त्रित करने का प्रयास करते थे। असफलता की स्थिति में वे निस्सन्देह यह स्वीकार करने लगे कि जादू से भी अधिक शक्तिशाली कोई अलौकिक सत्ता अवश्य है जो सम्पूर्ण प्राकृतिक शक्तियों को नचाती रहती है। इस पराश्रित मनोवृत्ति के परिणामस्वरूप उनके हृदय में ऐसी अलौकिक शक्ति के प्रति श्रद्धा, भय, विस्मय और भक्ति की भावना का प्रादुर्भाव हुआ। अतः जादू की असफलता ही धर्म की उत्पत्ति का प्रधान कारण है।

परन्तु फ्रेजर के सिद्धान्त निर्माण करने के इस प्रयास का खण्डन निम्नलिखित रूप में किया जा सकता है–

1. जादू के प्रति अविश्वास निश्चय ही धर्म की उत्पत्ति का कारण नहीं हो सकता है।

2. इन दोनों का अस्तित्व सदैव साथ-साथ हो सकता है, तथा धर्म का अधोपतन जादू की दिशा में हो सकता है।

3. ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता है जिसके आधार पर यह सिद्ध किया जा सके कि आदिम संस्कृति में लोगों में जादूई व्यवहारों की असफलता की अनुभूति जागृत हुई थी जैसा कि फ्रेजर का दावा है।

4. यदि ऐसी असफलता का कोई चिन्ह मिलता भी है तो इसके आधार पर यह सिद्ध करना कठिन है कि इससे किस प्रकार आदिम लोगों में धार्मिक भावना की सृष्टि हुई, यद्यपि, यदि यह पहले से विद्यमान रहा हो तो निश्चय ही यह उनमें धार्मिक विचारों को उद्भूत करने में सहायता प्रदान कर सकता है।

5. तथापि, यहाँ हम *एडुअर्ड मेयर* के इस कथन को उद्धृत करना चाहेंगे कि जादू से धर्म की व्युत्पत्ति की धारणा आलोचना करने का कम अवसर प्रदान करती है। ऐसा कहा जा सकता है कि जादू की व्यवस्था सभी आदिम मनुष्यों के कार्यों एवं विचारों के तरीकों को प्रभावित करती है, तथा जादू की व्यवस्था से ही विचारों एवं व्यवहारों के उस निकाय का विकास हुआ है जिसे हम धर्म के नाम के अन्तर्गत सम्मिलित करते हैं।[1] सामान्य रूप से धर्म की उत्पत्ति की व्याख्या के सन्दर्भ में इसकी बहुत

1. देखिये, एडुअर्ड मेयर, *एलिमेन्टरि एन्थ्रोपॉलाजी*, 1910, पृष्ठ 92

अधिक आलोचना नहीं की जा सकती, किन्तु यदि कोई यह कहने का दुराग्रह करता है कि जादू धर्म का पर्याप्त कारण है तो यह गम्भीर आपत्ति का विषय बन जाता है। विशेषकर धर्म की मनोवैज्ञानिक प्रकृति को लेकर यह विचाराधीन विषय बन जाता है, क्योंकि जादू इसकी व्याख्या नहीं कर पाता है।

6. धार्मिक एवं जादूई दृष्टिकोण में विशेष अन्तर पाया जाता है जो यह कहने के लिए बाध्य कर देता है कि जादूई व्यवहार में धर्म के जीवाणु नहीं पाये जाते हैं।

7. अन्ततः हम जादू से धर्म की उत्पत्ति होने की बात का खण्डन इस आधार पर करना चाहेंगे कि प्रारम्भिक धर्म कृपा के अनुभव पर मानवीय मनोदशा को प्रकट करता है जो जादू से पूर्णतया भिन्न है।

हमारा सामान्य निष्कर्ष है कि धर्म और जादू एक-दूसरे से व्युत्पन्न नहीं हैं तथा दोनों समान रूप से आदिम हैं। मानव को अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने की दिशा में इन दोनों की क्रियाओं का बोध है, परन्तु इन दोनों के साध्यों के सन्दर्भ में पर्याप्त अन्तर है। आदिम संस्कृति में ये दोनों आदिम मानव की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में इतना अधिक निकट हो जाते हैं कि ये कारणिक व्याख्या के सन्दर्भ में एक दूसरे के पर्याय समझे जाने लगते हैं। इन दोनों में वास्तविक अन्तर उनके साध्यों की प्राप्ति में प्रयोग में लायी जाने वाली प्रविधियों एवं विधियों को लेकर है।

अन्ततः हम *फिनेगन* महोदय के साथ यह कहना चाहेंगे कि जादू को न तो धर्म का उद्गम स्रोत माना जा सकता है और न ही धर्म को जादू का उद्गम स्रोत माना जा सकता है। वस्तुतः मानवीय अन्तर्क्रिया के क्षेत्र में ये एक-दूसरे में घुले-मिले दिखाई देते हैं और आपस में इनका सहभाव रहता है। इन दोनों के बीच केवल प्राकारिक अन्तर है, अतः इन दोनों में से किसी एक को दूसरे से व्युत्पन्न हुआ नहीं माना जा सकता है।[2]

जादू का स्वरूप : सम्प्रत्यात्मक विश्लेषण

जादू व्यावहारिक क्रियाओं की एक ऐसी प्रक्रिया है जिससे अलौकिक शक्तियों को कुछ विशिष्ट रहस्यात्मक एवं गुप्त प्रविधियों एवं विधियों की सहायता से नियन्त्रित कर वांछित लौकिक इच्छाओं की पूर्ति करने का प्रयास किया जाता है।

जादू को और अधिक स्पष्ट करने के लिए उनकी निम्नलिखित विशेषताओं पर ध्यानाकर्षित करना आवश्यक है :

1. जादू व्यावहारिक क्रियाओं की एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की रहस्यात्मक एवं गुप्त प्रविधियों एवं विधियों, जैसे मन्त्र आदि का प्रयोग किया जाता है।

2. इन प्रविधियों एवं विधियों के प्रयोग द्वारा वांछित लौकिक उद्देश्यों की पूर्ति की जाती है।

3. इन लक्ष्य विशेष की पूर्ति बलप्रयोगात्मक समझी जाती है, क्योंकि इसके अन्तर्गत अलौकिक शक्तियों पर नियन्त्रण प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है।

4. इसमें अलौकिक शक्तियों को रहस्यात्मक ढंग से प्रसन्न करने का प्रयास किया जाता है।

5. जादू में कभी-कभी धार्मिक प्रार्थनाओं एवं स्तुतिगान का भी प्रयोग किया जाता है। उदाहरणस्वरूप हिन्दू धर्म के क्षेत्र में यह विश्वास पाया जाता है कि यदि कोई व्यक्ति महामृत्युंजय का जाप करता है या किसी गुणी व्यक्ति द्वारा इसका जाप करवाये तो कुछ समय तक मृत्यु पर विजय प्राप्त की जा सकती है। इसके साथ ही यहाँ यह भी विश्वास किया जाता है कि यदि कोई महामृत्युंजय का उल्टा जाप

[2] फिनगेन जैक, *दि आर्केलाजी ऑफ वर्ल्ड रिलिजन्स*, प्रिन्सेटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 1952, पृष्ठ 6

अपने किसी शत्रु के नाम से करे या करवावे तो उसके शत्रु की मृत्यु अवश्यमभावी है। यदि इस सोच के साथ कोई व्यक्ति अपने शत्रु का अनिष्ट करने के सन्दर्भ में महामृत्युंजय का उल्टा जाप करता या करवाता है तो इस कृत्य को धार्मिक कृत्य न मानकर जादूई कृत्य माना जाएगा क्योंकि ऐसी सिद्धि कुछ विशिष्ट प्रविधियों एवं विधियों का अनुशीलन करके ही प्राप्त की जा सकती है न कि अलौकिक शक्ति की कृपा या अनुग्रह से। इससे यह सिद्ध होता कि धर्म और जादू कदाचित् संयुक्त रूप में पाये जाते हैं।

जादूई कृत्य में समाहित तत्व

किसी भी जादूई कृत्य में निम्नलिखित तत्त्व समाविष्ट होते हैं–

1. कुछ विशिष्ट प्रविधियों एवं विधियों का प्रयोग

जादूई क्रियाओं में कुछ विशिष्ट प्रविधियों एवं विधियों का प्रयोग किया जाता है। इन प्रविधियों एवं विधियों की सहायता से स्वतः घटित होने वाली घटनाओं को क्रम से प्रभावित करने का प्रयास किया जाता है। इन्हीं की सहायता से देवताओं या अलौकिक शक्तियों को द्रवीभूत करने की कोशिश की जाती है। विशिष्ट प्रविधियों एवं विधियों के प्रयोक्ता की यह मान्यता होती है कि यदि कुछ कार्यक्रमों को सूक्ष्य रूप में कार्य में लाया जाए तो कुछ निश्चित परिणाम अवश्य निकलेंगे। इस प्रकार विधिक प्रयोग कारण तथा कार्य की एक सम्पूर्ण नियमितता की पूर्व कल्पना पर आधारित होता है। विशिष्ट प्रविधियों एवं विधियों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रविधि "मन्त्र" है। मन्त्र ऐसे शब्द होते है जो सामान्य शब्द से भिन्न होते हैं और प्रायः गुप्त रखे जाते हैं। इसका प्रयोग केवल वे ही व्यक्ति करते हैं जो जादूई क्रिया में दक्ष होते हैं। परन्तु जब जादू सामूहिक रूप से मान्य होता है तब उस समूह के सभी सदस्य उन मन्त्रों से परिचित होने के लिए भी यथासम्भव इन मन्त्रों को उन सब लोगों से गुप्त रखने का प्रयास किया करते हैं जो उनके समूह के सदस्य नहीं होते हैं।

मन्त्रों के प्रतिफलित होने के लिए बहुधा उनका उच्चारण कतिपय विशिष्ट क्रियाओं के साथ करना आवश्यक होता है। ये क्रियायें मन्त्रोच्चार को रहस्यात्मक तत्व प्रदान करती है। यह विश्वास किया जाता है, कि मन्त्रोच्चार तथा कतिमय विशिष्ट क्रियाओं के सम्पादन के परिणामस्वरूप देवताओं एवं अलौकिक शक्तियों को सन्तुष्ट कर अभीष्ट की प्राप्ति की जा सकती है।

2. कतिमय विशिष्ट भौतिकीय उपकरण

मन्त्रों के प्रयोग के साथ जादूई क्रिया में आवश्यक रूप से कुछ विशिष्ट भौतिकीय उपकरणों का प्रयोग किया जाता है। इसमें आवश्यक रूप से भौतिक उपादानों, जैसे- मिट्टी, चावल, सरसों, खोपड़ी, फूल, मोम, चाकू, केश, नख, पान, सोपाड़ी, धागा, रस्सी, फूल, बीन तथा अन्य स्थूल भौतिक व परमाणविक पदार्थों का प्रयोग किया जाता है। यह विश्वास किया जाता है कि भौतिक उपादानों को प्रयोग में लाये बिना अलौकिक को इच्छानुसार कार्य करने को बाध्य नहीं किया जा सकता।

3. रहस्यात्मक व्यवहार

जादूई क्रिया में लक्ष्य की सिद्धि के लिए रहस्यात्मक व्यवहार का प्रदर्शन अत्यावश्यक समझा जाता है। जादूगर अलौकिक शक्ति पर आधिपत्य जमाने के लिए अनेक प्रकार का रहस्यानुष्ठान करते हुए दिखायी पड़ता है। इस सन्दर्भ में वे विविध प्रकार के भावोत्तेजक उद्गार नाटकीय ढंग से अभिव्यक्त करते हैं। प्रायः उसकी शारीरिक भंगिमा विशिष्ट मुद्रा में स्थित होती है। उसकी मनः स्थिति कुछ आश्चर्यजनक एवं विलक्षण सी दिख पड़ती है। कभी-कभी उसका रूप अति भयंकर सा दिख पड़ता है।

4. विशिष्ट परिधान, वेशभूषा एवं अलंकार

जादूई क्रिया में विशिष्ट परिधान एवं वेशभूषा धारण करने की महती आवश्यकता होती है।

जादूगर सामान्यतः अपने व्यक्तत्व को आकर्षक बनाने के लिए विभिन्न प्रकार के रंगीन वस्त्रों को धारण करते हैं। वे प्रायः काला, गैरिक एवं लाल आदि रंगीन वस्त्रों का धारण करना आवश्यक समझते हैं।

शरीर को आकर्षक बनाने के लिए वे विभिन्न प्रकार के रंगीन वस्त्रों के अतिरिक्त अनेक प्रकार के अलंकारों का भी प्रयोग करते हैं। कानों में वे कुण्डल व कर्णशोभन नामक आभूषण पहनते हैं। वे हाथों में कड़े आदि का भी प्रयोग करते है। गले में प्रायः मणियाँ भी धारण करते हैं। कभी-कभी कुछ जादूगर बालों को ही विविध रूपों में गूँथकर अलंकृत कर लेते हैं। हाथों की अंगूलियों में वे प्रायः विभिन्न पदार्थों से निर्मित अंगूठी का भी प्रयोग करते हैं।

5. निषिद्ध व्यवहार

जिन दिनों जादूई क्रियाएँ सम्पादित की जाती हैं उन दिनों कतिपय आहार तथा व्यवहार-प्रकार निषिद्ध होते हैं। इतना ही नहीं वरन् उन दिनों सामान्य जीवन से भिन्न प्रकार का जीवन व्यतीत करना आवश्यक समझा जाता है। यदि जादूई क्रिया से अभीष्ट की सिद्धि नहीं हो पाती है तो उसकी असफलता के सम्बन्ध में बहुधा यह सोच लिया जाता है कि जादूगर ने किन्हीं निषद्ध व्यवहारों का उल्लघंन किया होगा।

धर्म एवं जादू समानता एवं भिन्नता

धर्म एवं जादू यद्यपि दो भिन्न अवधारणाएँ हैं, तथापि इन दोनों अवधारणाओं के क्षेत्र विभाजन की रेखाएँ इतनी धुँधली व अस्पष्ट हैं कि इनका विश्लेषण इन्हें भिन्न मानकर नहीं किया जा सकता। वस्तुतः धर्म से कई तत्व जादू की मान्य स्थितियों में भी प्राप्य हैं और इसी प्रकार जादूई तत्वों की उपलब्धि धर्म के क्षेत्र में भी दीख पड़ती है।

यहूदी एवं ईसाई धर्म में कुछ जादू सदृश यांत्रिक क्रियाएँ स्वयं में पवित्र समझी जाती हैं। उदाहरणास्वरूप किसी प्रार्थना का उच्चारण बिना उसका शाब्दक अर्थ जाने हुए ही एक घुमाना-दिखाना ही प्रार्थना का कार्य करता है।

जर्मन समाजशास्त्री *मैक्समूलर* ने "जादू का प्रयोग ऐसी धार्मिक क्रिया के लिए किया है जिसके विषय में यह धारण है कि वह स्वतः ही प्रभावपूर्ण है चाहे लक्ष्य आनुभाविक हो अथवा गैर-आनुभाविक हो। ब्रोनिस्ला मैलिनास्की ने आनुभाविक उद्देश्यों के लिए अलौकिक साधनों के उपयोग को ही जादू कहा, किन्तु उन्होंने "जादू" और "धर्म" में विभेद किया।[3] इस प्रयोग की कमी यह है कि कई प्रार्थनाओं का वर्गीकरण कठिन हो जाता है, क्योंकि कई प्रार्थनाएँ (जो कि अलौकिक की ओर निवेदित होती हैं और आमतौर से धार्मिक मानी जाती हैं) आनुभाविक लक्ष्यों के लिए होती हैं- यथा, बीमार व्यक्ति के स्वास्थ्य लाभ के लिए। "धर्म" और "जादू" के बीच में किए गए किसी भी शास्त्रीय विभेद की यह कमी तो रहेगी ही कि वह सामान्य प्रचलन के विपरीत जाता है। जादू को धर्म का एक अंश मानना, जैसा कि प्रभृति अध्येताओं जैसे *होल्ट*[4] एवं *गुडे*[5] आदि ने माना है कि सैद्धान्तिक दृष्टि से इस आधार पर उचित है कि अन्य धार्मिक क्रियाओं की भाँति जादू में भी अलौकिक जगत् तथा मोक्ष की समस्या

3. मैलिनावस्की के सिद्धान्त को स्पष्ट रूप से पारसन्स ने *एसेज इन सोशियोलाजिकल थीयरी* (संशोधित संस्करण, 1954) के अध्याय 10 "दि थ्यूरिटिकल डेवलपमेन्ट ऑफ दि सोशियॉलॉजी ऑफ रिलिजन" में प्रस्तुत किया है। यहाँ जी.सी. होमन्स द्वारा विरचित *दि ह्यूमन ग्रूप*, हारकोर्ट ब्रेस, 1950, पृष्ठ 321-330 में दिये गये विवेचन को भी देखा जा सकता है।
4. थॉमस फोर्ड हॉल्ट, *दि सोशियालॉजी ऑफ रिलिजन*, दि ड्राइडेन प्रेस इंक, न्यूयार्क, 1958
5. विलयम जे. गुडे, *रिलिजन अमंग दि प्रिमिटिव्स*, फ्री प्रेस, ग्लेन्को, 111, 1951

(अलौकिक साधनों द्वारा अशुभ से रक्षा) में अभिरूचि रहती है। *पिडिंग्टन* ने भी *होल्ट* एवं *गुडे* के मतों का समर्थन करते हुए कहा कि "इसलिए यह श्रेष्ठतर है कि हम सामान्यतया जादूई-धार्मिक प्रघटनाओं, संस्थाओं, विश्वासों तथा व्यवहारों की बात धर्म एवं जादू के कठोर और लचीले वर्गीकरण के प्रयत्न के बिना करें।"[6] *हॉबेल* का भी कहना है कि आदिम मनुष्य किसी भी तरह- "धर्म एवं जादू की वैचारिकीय भिन्नता से सम्बन्धित नहीं है। इसकी अपेक्षा, वह दोनों को सर्वोत्तम रूप से मिलाकर अपने उद्देश्यों की पूर्ति करता है।"[7]

विकसित व उन्नत धर्म वाले समाजों में भी जादूई क्रियाओं की उपस्थिति अभिलक्षित होती है। इसी प्रकार अविकसित व अप्रगतिशील समाजों में भी जहाँ जादूई क्रियाओं का प्राबल्य है, हम कई धार्मिक क्रियाओं को उनके मौलिक रूप में सम्पादित होते देखते हैं। अतः इन दोनों ही अवधारणाओं का समान रूप से एक साथ उल्लेख और विश्लेषण आवश्यक है।

धर्म एवं जादू में समानताएँ

1. धर्म एवं जादू दोनों में ही अलौकिक शक्ति की सहायता प्राप्त करने में पूर्ण आस्था होती है। इन दोनों में इस शक्ति की सहायता प्राप्त करने के लिए प्रार्थना की जाती है।

2. ये दोनों ही सृष्टि के रहस्य से अनुप्राणित होते हैं।

3. दोनों का मूल आत्मनिष्ठता में अन्तर्विष्ट है।

4. दोनों बहुधा व्यावहारिक उद्देश्य की पूर्ति करते हैं।

5. दोनों में कर्मकाण्ड एवं संस्कार के पक्ष समान रूप से दिखाई पड़ते हैं।

6. दोनों में सामूहिक क्रिया अभिलक्षित होती है।

7. दोनों को सम्पादित करने का एक निश्चित क्रम होता है।

8. दोनों में "गुणी" व्यक्ति की आवश्यकता महसूस होती है। धर्म के क्षेत्र में गुणी व्यक्ति की भूमिका पुरोहित के रूप में देखी जाती है, जबकि जादू के क्षेत्र में 'गुणी' की भूमिका जादूगर के रूप में दिख पड़ती है।

9. धर्म तथा जादू दोनों में कतिपय मन्त्र गुप्त रखे जाते हैं।

10. दोनों में ही कतिपय आहार एवं व्यवहार-प्रकार निषिद्ध होते हैं।

11. दोनों में यह विश्वास किया जाता है कि मन्त्रोच्चार और क्रियाओं का सम्मिलित प्रभाव अभीष्ट की सिद्धि को पास लाता है।

12. दोनों में अभिप्रेत लक्ष्य की असफलता का कारण मन्त्रों के शब्द-क्रम अथवा उनके साथ की जाने वाली क्रियाओं में या तो कोई त्रुटि होने अथवा उसके द्वारा अनिवार्य निषेधों के उल्लघंन को उत्तरदायी माना जाता है।

धर्म एवं जादू में विभिन्नताएँ

इसमें सन्देह नहीं कि धर्म और जादू में कई समानताएँ अभिलक्षित होती हैं, परन्तु यह भी सत्य है कि धर्म और जादू अपने मौलिक तत्वों के आधार पर एक-दूसरे से पूर्णतया भिन्न एवं पृथक हैं। इस भिन्नता का स्पष्टीकरण निम्नलिखित रूप में किया जा सकता है–

6. आर. पिडिंगटन, *सोशल एन्थ्रोपोलाजी*, 1959, पृष्ठ 363
7. इ.ए. हॉबेल, *मैन इन प्रिमिटिव वर्ल्ड*, पृष्ठ 410

धर्म	जादू
1. धर्म का सम्बन्ध सजीव शक्ति से होता है।	1. जादू का सम्बन्ध निर्जीव शक्ति से होता है।
2. इसके अन्तर्गत अलौकिक शक्ति में पूर्ण आस्था होती है। उसकी आराधना व उपासना की जाती है तथा उससे कृपा एवं सहायता प्राप्त करने के लिए प्रार्थना भी की जाती है।	2. इसके अन्तर्गत अलौकिक शक्ति में पूर्ण आस्था होते हुए भी इससे प्रार्थना नहीं की जाती, बल्कि इसको मंत्र बल के आधार पर नियन्त्रित रखा जाता है।
3. इसमें अभीष्ट की प्राप्ति के लिए अलौकिक शक्ति से अनुनय-विनय किया जाता है। इसमें दैन्य भाव और सेवा भाव सदैव विद्यमान रहते हैं।	3. इसमें अभीष्ट प्राप्ति के लिए अलौकिक शक्ति से बल का प्रयोग किया जाता है।
4. धर्म के प्रति व्यक्ति में समर्पण की भावना पाई जाती है। वह अपने को उसके लिए तन, मन, धन सब कुछ समर्पित कर देता है। वह अपने अस्तित्व को भूल जाता है एवं त्राहि-त्राहि कहकर शरणागत हो जाता है। इस सन्दर्भ में अन्तिम सत्य के प्रति भक्तगण पुष्प, फल एवं जल अर्पित करते दृष्टिगत होते हैं।[8]	4. इसमें अपने सामर्थ्य का अधिकाधिक भाव रहता है एवं अलौकिक शक्ति पर अपना आधिपत्य रखने की भावना पाई जाती है। इसमें समर्पित होने की बात का पूर्णतया अभाव रहता है।
5. यह श्रद्धायुक्त विनयात्मक वचनों से ओत-प्रोत होता है। परम् सत् से अभिभूत होकर उससे कृपा की आकांक्षा रखना ही सच्ची धार्मिकता है। धार्मिक व्यक्ति के अन्तर दैन्यभाव और सेवाभाव सदैव विद्यमान रहते हैं।	5. यह आज्ञामूलक वचनों से ओत-प्रोत रहता है।
6. धर्म में सर्दव आबद्ध रहने की चेष्टा की जाती है।	6. इसमें अलौकिक शक्ति से स्वतन्त्र रहने का प्रयास किया जाता है।
7. धर्म में भेड़ एवं गड़ेरिया का सम्बन्ध पाया जाता है।	7. जादू में क्रेता एवं विक्रेता का सम्बन्ध पाया जाता है।

8. भगवान राम के समक्ष विभीषण की शरणागत की झाँकी का वर्णन सन्त तुलसीदास ने इस प्रकार किया है–
"श्रवण सुजसु सुनिआयउ प्रभु भंजन भव भीर।
त्राहि-त्राहि आरति हरन सरन सुखद रघुवीर।।
अर्पण की प्रशंसा करते गीताकार लिखते हैं–
"पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति।
तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः।।"
उदाहरण के लिए द्रौपदी के केवल साग की पत्ती अर्पण करने से, गजेन्द्र के पुष्प की भेंट चढ़ाने से, शबरी के केवल फल अर्पण करने से और रन्तिदेव के केवल जल प्रदान से ही भगवान प्रसन्न हो गए थे। भगवान की उद्घोषणा है कि सभी वैश्य, शूद्र तथा पापयोनि-चाण्डाल आदि जो कोई भी हो, वे भी मेरे शरण होकर परमगति को ही प्राप्त होते हैं,
इमां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपिस्युः पापयोनयः।
स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यान्ति ५ांगतिम्।। - श्रीमद्भगवद्गीता, 9:32

8. धर्म एवं उसके अनुयायियों के बीच वैयक्तिक भावात्मक आवेष्ठन पाया जाता है।	8. जादू एवं उसके अनुयायियों के बीच अवैयक्तिक एवं गैर भावात्मक सम्बन्ध पाया जाता है।
9. धर्म में मानवीय दुर्बलता को स्वीकार किया जाता है।	9. जादू मानव के इस विश्वास पर आधारित होता है कि वह अज्ञात शक्ति को नियन्त्रित एवं शासित और ज्ञात संसार को प्रभावित कर सकता है।
10. धर्म में प्रायः अधिक सामान्य उद्देश्यों की पूर्ति की जाती है। इसमें समाज स्वीकृत उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए प्रयत्न किये जाते हैं।	10. जादू में सामान्यतः विशिष्ट बहुधा वैयक्तिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्रयत्न किये जाते हैं।
11. धार्मिक कृत्य पवित्र माने जाते हैं।	11. जादूई कृत्य अपवित्र माने जाते हैं।
12. धार्मिक कर्मकाण्ड एवं व्यवहार संस्थागत हो जाते हैं।	12. जादूई कृत्य सांस्थानिक नहीं हो पाते हैं।
13. धर्म अपने अनुयायियों को एकता के सूत्र चर्च व समूह में बाँधने का कार्य करता है। उसके अनुयायियों में 'हम' की भावना पाई जाती है।	13. जादू अपने अनुयायियों को एकता के सूत्र में बाँधने में पूर्णतया असमर्थ होता है। दुर्खीम कहते हैं कि सम्पूर्ण इतिहास में जादू का कोई चर्च नहीं पाया जाता है।
14. धर्म आचार सापेक्ष होता है। यह परार्थ और लोक कल्याण व मंगलकारी भावना से ओतप्रोत होता है। सामाजिकता और नैतिकता धर्म की आत्मा है।	14. जादू आचार निरपेक्ष होता है। उसमें हठ एवं अहंकार का आधिपत्य होता है। प्रकृतितः असामाजिक एवं अनैतिक होता है।
15. धार्मिक क्रियाकलाप सामान्यतः अपने चर्च समूह का प्रतिनिधित्व करते हैं।	15. जादूई क्रियाकलाप केवल एकल जादू-कर्ता का प्रतिनिधित्व करते हैं।
16. धर्म सामान्यतः गैर-अनुभावात्मक, अज्ञात जगत् की ओर अभिमुख होता है। यद्यपि इसका सम्बन्ध इस लौकिक जगत् से भी हो सकता है, तथापि इसमें लोकोत्तर जगत् का सन्दर्भ सदैव विद्यमान रहता है।	16. जादू में सामान्यतः इसका अभाव रहता है, क्योंकि इसका सम्बन्ध केवल ज्ञात अनुभवात्मक जगत् से ही होता है।
17. धर्म का सम्बन्ध सम्पूर्ण जीवन-दर्शन या सिद्धान्त से होता है। परमसत् की प्राप्ति व्यक्ति के जीवन का परमसाध्य होता है।	17. जादू का सम्बन्ध अधिकांशतः परमाणविक होता है। जादूगर का परमसाध्य ऐश्वर्य सिद्धि और चमत्कारिक कृत्यों से लोगों को चकाचौंध करना होता है।

धर्म एवं जादू के बीच दर्शाये गये उपर्युक्त अन्तर यद्यपि वैज्ञानिक विश्लेषण की दृष्टि से उचित हैं, परन्तु दिन-प्रतिदिन के सामाजिक जीवन एवं जादू दोनों का समान महत्त्व होता है और ही जीवन के दो विभिन्न पक्षों को निर्दिष्ट करते हैं।

जादू के प्रकार–

जादूई क्रियाओं के विभिन्न प्रकार जो विभिन्न समूहों द्वारा स्वीकार किये जा चुके हैं, प्रायः

असीमित हैं, तथापि विवेचनागत् अध्ययन की सुगमता हेतु इसे हम पाँच भागों में विभाजित कर सकते हैं–

1. होमियोपैथिक अथवा अनुकरणात्मक जादू

इस प्रकार के जादू का तात्पर्य है समान का समान प्रभाव अर्थात् समान कारण से समान कार्य उत्पन्न होता है। इसका निहितार्थ यह है जब एक प्रकार की जादूई क्रिया सम्पादित की जाती है तो उसका परिणाम समानधर्मी होता है। इसके कर्ता यह विश्वास करते हैं कि उसकी क्रियाओं का अनुकरणात्मक प्रभाव होगा और इस तरह उसकी अभीष्ट की प्राप्ति होगी। निम्नलिखित उदाहरणों के माध्यम से इस जादू का सम्यक् अवबोध प्राप्त किया जा सकता है–

1. आस्ट्रिया में यह विश्वास प्रचलित है कि यदि प्रसवा माँ को किसी वृक्ष का फल खाने को दिया जाए तो उस वृक्ष में आगत वर्ष में काफी फल आयेंगे। यहाँ प्रसवा माँ एवं वृक्ष-फल में अनेकरणात्मक सम्बन्ध हैं।

2. कोललारी समाज में जब कभी युवक प्रेमी अपनी प्रेयसी से मिलने रात्रि के समय उसके घर जाता है तो वह श्मशान से कुछ मिट्टी साथ में लेता जाता है जिसे वह अपनी प्रेमिका के घर की छत पर डाल देता है। इसका यह प्रयोजन होता है कि उनकी गुप्त भेंट के समय प्रेमिका के माता-पिता गहरी नींद में सोते रहें और उनके कारण प्रेमी-प्रेमिका को कोई बाधा न पहुँचे। यहाँ श्मशान की मिट्टी एवं प्रेमिका की माता-पिता की गहरी नींद में अनुकरणात्मक समानता है।

3. छोटानागपुर में जनजातियाँ समझती हैं कि विद्युत के साथ जो गड़गड़ाहट होती है, वह गड़गड़ाहट ही वर्षा का प्रत्यक्ष कारण है। इसलिए वर्षा लाने के लिए वे पहाड़ पर चढ़कर बड़ी-बड़ी चट्टानों को नीचे ढकेलते हैं। इन चट्टानों के नीचे लुढ़कने से जो गड़गड़ाहट पैदा होती है, उससे वर्षा लाने का वे प्रयत्न करते हैं। पत्थरों की गड़गड़ाहट व बिजली की गड़गड़ाहट में अनुकरणात्मक समानता है।

4. "हो" जनजाति में वर्षा लाने के लिए कूड़े के बड़े-बड़े ढेर जलाये जाते हैं। इन ढेरों के जलाने पर धुओं उठता है, वह बादल के समान होता है और इससे वे वर्षा लाने का प्रयत्न करते हैं।

5. "खोड" जनजाति के लोग वर्षा लाने के लिए मनुष्य की बलि चढ़ाते हैं और समझते हैं कि जैसे बलि के मनुष्य के आँसू निकलते हैं, खून बहता है वैसे बलिदान के साथ-साथ वर्षा होने लगेगी।

6. अनुकरणात्मक जादू का शास्त्रीय उदाहरण मालवा में व्यक्ति का मोम की प्रतिमा बनाकर उसको प्रभावित करने के व्यवहार का प्रचलन है। यहाँ यह विश्वास किया जाता है कि यदि कोई प्रतिमा की आँख का छेदन या भेदन करता है तो उसका शत्रु अन्धा हो जाएगा। यदि कोई उसके पेट का छेदन करता है तो उसका शत्रु बीमार हो जाएगा। यदि कोई उसके सिर का भेदन करता है, तो उसका शत्रु सिर दर्द से आहत हो जाएगा। यदि कोई उसकी हत्या कर देता है तो उसके शत्रु की भी मृत्यु हो जाएगी। यदि कोई यह चाहता है कि इस व्यक्ति की मृत्यु का दोष उस व्यक्ति पर न लगे तो उसे यह कहना चाहिए कि "मैंने इसकी हत्या नहीं की है, बल्कि उसकी हत्या गैब्रीयल ने की है।" इस प्रकार मालवा के लोगों का विश्वास है कि जिस प्रकार की यातना एवं वेदना मोम की प्रतिमा को दी जाएगी, वैसी ही यातना एवं वेदना उसके शत्रु को भी होगी।

7. अपने शत्रु के पुतले को तरह-तरह के कष्ट पहुँचाने की प्रथा भी कई जनजातियों में प्रचलित है। इन सबका विश्वास है कि जो कष्ट उस पुतले को पहुँचाया जा रहा है वही कष्ट उसका शत्रु भी भोगेगा।

2. सांसर्गिक जादू

सांसर्गिक जादू का मूलाधार यह है कि यदि कोई वस्तु किसी व्यक्ति के सम्पर्क में आ जाती है तो यह समझा जाता है कि सम्पर्क में आयी हुई वस्तु सम्पर्क में आये हुए व्यक्ति को सदैव प्रभावित करती रहती है, चाहें वह भौतिक रूप से उस व्यक्ति से दूरस्थ ही क्यों न हो। उदाहरणस्वरूप, कुछ लोगों का विश्वास है कि किसी व्यक्ति के बाल या नाखून उस व्यक्ति के शरीर से सम्बन्धित होते हैं, अतः यदि उन्हें उसके शरीर से काटकर अलग कर दिया जाए तो भी उसके शरीर से इसका सम्बन्ध बना रहता है। यदि किसी व्यक्ति की कोई वैयक्तिक सम्पत्ति खो जाय या उसको उससे दूर कर दिया जाय या हटा दिया जाय तब भी उस सम्पत्ति से उसका सम्बन्ध बना रहता है। इस प्रकार एक अंग में जो घटना घटेगी वह दूसरे अंग को भी समान रूप से प्रभावित करेगी। एक अंग में परिवर्तन होने से दूसरे अंग में भी समान रूप से परिवर्तन होने लगता है। यद्यपि यह सम्बन्ध प्राकृतिक कारणात्मक सम्बन्ध की भाँति बहुत अधिक प्रभावशाली नहीं भी हो सकता है, किन्तु यह विश्वास किया जाता है कि इस पर जादूई क्रिया करने से उसके धारणकर्ता पर उसका अधिक प्रभाव पड़ सकता है। जादूगर उस वस्तु का प्रयोग अपने लाभ के लिए कर सकता है। बाल या नाखून शरीर से अलग होने पर उसके बिना किसी प्रकार का प्रभाव डाले नष्ट हो सकते हैं। परन्तु यदि कोई अन्य व्यक्ति उसके बाल या नाखून को लेकर उसके धारक के प्रति जादूई कृत्य कर उस पर चोट या हानि पहुँचाता है तो उसकी शक्ति बढ़ जाती है। अर्थात् उसके मौलिक धारक को समान रूप से चोट या हानि पहुँचायी जा सकती है। *फ्रेजर*[9] इस प्रकार के जादूई विश्वास का दृष्टान्त देते हुए कहते हैं कि यदि एक जख्म से एक तीर ले ली जाती है और गीली पत्तियों से लपेटकर साफ-सुथरे एवं आर्द्र स्थान पर रख दिया जाता है तो वह जख्म ठीक हो जाता है। यदि उस तीर पर जंग या मोरचा लग जाता है तब उस जख्म में पीव या मवाद भर जाता है। इसी प्रकार यदि कोई जादूगर अपने हथियार को तापित करता है तो यह आहत व्यक्ति को भी ताप प्रदान करता है और उसे ज्वरग्रस्त कर देता है।

हमारे समाज में सांसर्गिक जादू का व्यापक प्रसार है। हिन्दू समाज में शिशु के जन्म के बाद उसकी नाल और योनिज को व्यर्थ समझकर ऐसे ही नहीं फेंक दिया जाता वरन् शिशु की सुरक्षा के लिए उन्हें किसी साफ-सुथरे स्थान पर गाड़ दिया जाता है। कुछेक समाजों में शिशु के प्रथम केशों को सँभालकर रखा जाता है और बाद में उन्हें बहते पानी में फेंक दिया जाता है। इसी तरह *चेरोकी समाज* में शिशु की नाल को किन्हीं विशेष स्थलों पर रख दिया जाता है, जैसे पुत्र की नाल को किसी वृक्ष पर टाँग दिया जाता है, ताकि वह बड़ा होने पर कुशल आखेटक बन सके, तथा कन्या की नाल को अनाज की कोठी के नीचे गाड़ दिया जाता है जिससे वह बड़ी होने के पश्चात् अच्छा भोजन बना सके।

सांसर्गिक जादूई विश्वास का एक अच्छा दृष्टान्त प्रख्यात गायक तानसेन का उद्धृत किया जा सकता है। ऐसा कहा जाता है कि ग्वालियर (मध्य-प्रदेश) के निकटस्थ किसी गाँव के ब्राह्मण परिवार में जन्में तानसेन का जन्म-नाम तन्ना था। संगीत से उनका अगाध लगाव था और इसकी शिक्षा उन्होंने इस जमाने के प्रसिद्ध गायक उस्ताद गौस से ग्रहण की थी। कहा जाता है कि उस्ताद गौस को तानसेन से इतना प्रगाढ़तर सम्बन्ध व लगाव था कि उन्होंने तानसेन को शीर्षस्थ गायक बनाने की लालसा से अपनी जीभ से उनकी जीभ लगाकर दीक्षा दी थी। कहते हैं इसी के परिणामस्वरूप तानसेन ब्राह्मण से मुसलमान हो गये। उस्ताद गौस ने जीभ से जीभ लगाकर इन्हें दीक्षा इसलिए दी ताकि सांसर्गिक प्रभाव से उनकी गायन शक्ति तानसेन में संचारित हो जाय।

---

9. देखें, जेम्स जी. फ्रेजर, "समपैथेटिक मैजिक" विलियम ए. लेस ऐण्ड इवॉन जेड वोग्ट, द्वारा सम्पादित पुस्तक *कम्परेटिव रिलिजन*, रो, पेटरसन ऐण्ड कं. इवान्स्टॅन 111, 1958, पृष्ठ 261

3. सहानुभूतिक जादू

फ्रेजर ने अनुकरणात्मक जादू तथा सांसर्गिक जादू दोनों के लिए सहानुभूतिक जादू शब्द का प्रयोग किया है। *फ्रेजर* का कहना है कि जिन वस्तुओं पर जादूई क्रियाएँ की जाती हैं वे लक्ष्योन्मुख होती हैं। सम्पर्क या समानता के कारण संवेदनात्मक भाव उद्दीप्त हो जाते हैं, जिससे उन वस्तुओं पर की जाने वाली क्रियाओं से लक्ष्य व अभीष्ट प्रभावित होता है। यही कारण है कि इस जादू को सहानुभूतिक जादू कहा जाता है। यह जादू सदैव सकारात्मक ही नहीं होता बल्कि कभी-कभी इसमें कुछ कार्यों का प्रतिपादन निषिद्ध कर दिया जाता है।

4. आवृत्तिमूलक जादू

आवृत्तिमूलक जादू का निहितार्थ यह है कि जब घटनाएँ साथ-साथ घटित होती हैं अथवा एक विशिष्ट अनुक्रम का अनुसरण करती हैं तो यह समझा जाता है कि एक साथ घटित होने वाली घटनाएँ सदैव उसी प्रतिमान पर घटित होती रहेंगी। इस प्रकार के जादू का उदाहरण *समनर महोदय* ने एक एस्किमो शिकारी के असफल शिकार के अनुभव के आधार पर प्रस्तुत किया है। शिकार पाने पर विफल होकर एस्किमो शिकार "स्लेज" पर वापस आता है तथा खाने के लिए सुअर की हड्डी प्राप्त करता है। चूँकि वह अपने हाथ में सूअर की हड्डी लेकर वापस आता है, इसलिए उसे एक सील मछली मिल जाती है और वह उसको मार देता है। वह इस सफलता का कारण उसके साथ सुअर की हड्डी की विद्यमानता को मानता है और इसके पश्चात् जब कभी वह शिकार पर जाता है, अपने साथ सदैव उस सुअर की हड्डी को लेकर जाता है। वह यह मानता है कि शिकार पर यदि वह उस सुअर की हड्डी को अपने साथ नहीं ले जाएगा तो शिकार प्राप्त करने में उसे सफलता नहीं मिलेगी।

हमारे समाज में प्रचलित अनेक अन्धविश्वास आवृत्तीय आधार पर आधृत हैं। यदि रास्ते में जाते समय कोई काली बिल्ली रास्ता काटते हुए विपरीत दिशा में चली जाती है तो उसे अशुभ या बुरे भाग्य का आमन्त्रण माना जाता है। यात्रा आरम्भ करते समय यदि कोई "काना व्यक्ति" अथवा कोई 'विधवा स्त्री' सामने आ जाय तो इसे भी अमंगलकारी माना जाता है। यदि किसी सवर्ण व्यक्ति के सामने प्रातःकाल बिस्तरा छोड़ने के पश्चात् कोई "तेली" जाति का व्यक्ति अथवा "योगी" जाति का व्यक्ति सामने आ जाय तो इसे भी दुर्भाग्य या असफलता का सूचक माना जाता है। इन विशिष्ट अनुक्रमों में घटनाओं के मध्य कार्य-कारण सम्बन्ध स्थापित कर लिया जाता है।

यह सम्भावना प्रकट की जाती है कि फीटिशवाद के अनेक स्वरूपों की उत्पत्ति इसी आधार पर हुई है। एक फीटिश कोई पदार्थ हो सकता है जिसे व्यक्ति हितकारी शक्ति से युक्त मानते हैं। इसे अच्छे भाग्य का निर्माण करने वाली शक्ति या दुर्भाग्य का परिहार करने वाली शक्ति के रूप में स्वीकार किया जाता है। यह विश्वास किया जाता है कि इस शक्ति को धारण करने वाले व्यक्ति का कभी अहित नहीं हो सकता, उसके जीवन में असफलता, दुर्भाग्य एवं विपन्नता कभी आ ही नहीं सकती। इसीलिए आदिम समाज में भौतिक सम्पन्नता अथवा सफल यात्रा हेतु फीटिश से युक्त रहना अथवा फीटिश को अपने साथ रखना अपरिहार्य समझा जाता है। जीवन में सफलता हासिल करने का कारण स्वयं व्यक्ति नहीं वरन् फीटिश है। आज भी मानव समाज में फीटिश की हितकारी शक्ति में विश्वास है। आज भी ताबीज, जड़ी-बूटी, स्फटिक पत्थर या किसी अन्य पदार्थ से युक्त रहने की धारणा स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। यह कहा जाता है कि द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान युद्धरत अनेक सैनिक विजयश्री प्राप्त करने के उद्देश्य से सुरक्षा के ताबीज व जन्तर या सफलता के लिए अभिमन्त्रित कुछ चीजें क्रॉस, बाइबिल, खरगोश का पाँव एवं "मेडल" इत्यादि रखते थे। वे उन वस्त्रों अथवा उपकरणों, जो पहले कभी जोखिम

से बचते समय उनके साथ थे, को सावधानीपूर्वक छुपाकर रखते थे। उनका आधारभूत विश्वास था कि ताबीज में अन्तर्विष्ट शक्ति युद्धस्थल में उनकी सहायता करेगी।

5. संकल्प-शक्ति जादू

जादूई शक्तियों को कुछ व्यक्तियों की मानसिक शक्तियों से सम्बन्धित होना भी बताया जाता है। इस प्रकार, यह विश्वास किया जाता है कि यदि एक व्यक्ति किसी उद्देश्य के प्रति संकल्पित एवं पूणरूपेण संकेन्द्रित होता है, तब संकेन्द्रण उसके वांछित उद्देश्य की प्राप्ति में एक अत्यन्त महत्वपूर्ण सहायक कारक बन जाता है। यदि कोई व्यक्ति अपने शत्रु को पर्याप्त मात्रा में घृणा की दृष्टि से देखता है तो निश्चय ही उसका शत्रु क्षतिग्रस्त अथवा नष्ट हो सकता है। यदि कोई किसी तरुणी पर हृदय से आसक्त है और अपने हृदय के अंतरतम से उसको प्यार करता है तो निश्चय ही वह उसे अपनी प्रेमिका बनाने में सफल हो सकेगा। *मेलिनॉस्की* का कहना है कि "संकल्प-शक्ति" का जादू सभी जादू का मूलस्वरूप हो सकता है।

इस प्रकार की तर्कणा के उदाहरण बहुधा अमेरिकीय समाज में परिलक्षित होते हैं। वस्तुतः यह तर्कणा इस प्रत्यक्षवादी चिन्तनधारा पर आधारित है कि "यदि अभीष्ट की सिद्धि चाहते हो तो इस पर पर्याप्त मात्रा में चिन्तन करो, वांछित परिणाम शीघ्र ही आपके समक्ष उपस्थित हो जाएगा।"

6. निषिद्ध या नकारात्मक जादू

यह जादूई उपागम न केवल अज्ञात के सन्दर्भ में व्यक्ति को क्या करना चाहिए पर बल देता है, बल्कि इस बात पर भी बल देता है कि उसे क्या नहीं करना चाहिए। उदाहरणस्वरूप, *सेलेबेस जनजातियों* में आशान्वित माता के पति से यह कहा जाता है कि जब उसकी पत्नी पाँच महीने का गर्भधारण कर ले तब उसे पालथी मारकर नहीं बैठना चाहिए, यदि वह ऐसा नहीं करता है तो उसकी पत्नी का प्रसव बहुत कठिन हो जाएगा एवं उसकी प्रसव-पीड़ा बहुत बढ़ जाएगी। अनेक जनजातियाँ व्यक्तियों का नाम लेने में निषेध का अनुशीलन करती हैं। उनको भय होता है कि नामोच्चारण करने से वे अपने "माना" को खो सकती हैं।

पोलिनेसिया में जनजातीय प्रधानों को इतना पवित्र माना जाता है कि जनसामान्य के स्पर्श से वे अपवित्र हो सकते हैं। अतः जहाँ एक ओर सामान्य जनता को उनके प्रधानों को स्पर्श करने से वर्जित कर दिया जाता है, वहाँ दूसरी ओर प्रधानों को भी सामान्य क्रियाकलापों में सहभागी होने से वर्जित कर दिया जाता है। प्रधानों के वर्जित कर्म भी होते हैं। वे वर्जित कर्मों का सम्पादन किसी भी परिस्थिति में नहीं कर सकते हैं। यदि वे इन निषेधों का पालन नहीं करते हैं तब वे अपवित्रता के शिकार हो जाते हैं।[10] आदम और हौवा के कृत्यों से स्पष्ट है कि किसी वृक्ष का फल खाने के लिए उन्हें वर्जित कर दिया गया था। वर्जन का उल्लंघन करने पर उन्हें पाप का भागीदार होना पड़ा।

7. "सफेद" जादू एवं "काला" जादू

"सफेद" प्रकार का जादू उपकारी जादू कहलाता है। इसे किसी व्यक्ति के या समूह के लाभ के लिए काम में लाया जाता है। इस जादू के बारे में विशेष बात यह है कि किसी जादूगर द्वारा समाज का अहित करने के लिए इसका उपयोग नहीं किया जा सकता।

कृषि, आखेट, युद्ध और स्वास्थ्य ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें सम्भवतः सफेद जादू का अधिक प्रयोग किया जाता है। वस्तुतः सफेद जादू सम्पूर्ण समुदाय के लिए सम्वर्द्धात्मक एवं संरक्षणात्मक होता

---

10. रूथ बेनेडिक्ट (उद्धृत) फ्रेंज बोआस द्वारा सम्पादित पुस्तक *जेनरल एन्थ्रोपालॉजी*, बोस्टन, 1938, पृष्ठ 645

है। इसका एक सुन्दर उदाहरण मैलिनॉवस्की ने लकड़ी के लट्ठों से बने एक झील के समीप के गाँव में बरसाती आपदा आने पर प्रस्तुत किया है उसको यहाँ उद्धृत करना समीचीन प्रतीत होता है :

"जब वायु का वेग अत्यन्त प्रबल हुआ तो समुदाय के एक वंशानुगत वायु-जादूगर ने सहसा जोरों से मन्त्रोच्चार किया.....मन्त्र के शब्द सरल थे।[11] उसने वायु को मन्द होने, निष्क्रिय हो जाने का आदेश दिया.....उसने यह जोर देकर कहा कि गाँव को कोई भी हानि नहीं पहुँच सकती।"

मैलिनॉस्की की इस पर टिप्पणी है कि "इस शाप का वायु पर क्या प्रभाव पड़ा, इससे हम शंकालुओं को कोई तात्पर्य नहीं, किन्तु उसकी वाणी का वहाँ के लोगों पर बिल्कुल जादूई असर हुआ..... यह स्पष्ट था कि ग्रामवासी अब अपने को सुरक्षित अनुभव करने लगे। और ज्यों हि जादूगर ने अपने मन्त्रोच्चार को समाप्त किया उसने वस्तुस्थिति को सम्हाला। उसने काम करने के लिए आदेश दिया और इन आदेशों का तत्काल ही अनुशासित और संगठित रूप से पालन किया गया।"[12]

ट्रोबिएंड द्वीपसमूह के निवासी गहरे समुद्र में मछली पकड़ने के लिए जादू को अपरिहार्य मानते थे, क्योंकि यह कार्य जोखिम वाला था।

आधुनिक अमेरिकीय जीवन में जो जादू व्यवहृत होता है वह इस नाम से नहीं जाना जाता। लोग इसे ज्योतिष (एस्ट्रोलॉजी) या अंकशास्त्र (न्यूमरोलॉजी) कहते हैं और उसे विज्ञान तक गिन सकते हैं, अच्छे भाग्य के लिए टोटके करते हैं और कुछ जादूई निषेधों का पालन कर सकते हैं जिनमें उनका थोड़ा-बहुत विश्वास होता है। अमेरिका में जिन क्षेत्रों में जादू अधिक प्रचलित है, उनमें प्रमुख ये हैं : युद्ध, कृषि, स्वास्थ्य, खेलकूद, व्यावसायिक थियेटर, किन्तु ऐसी कोई भी गतिविधि जिसमें अनिश्चितता का तत्व प्रधान हो उसमें जादू ही है।

विश्वास के आधार पर उपचार जैसा क्रिश्चियन साइन्स में होता है, सदैव ही जादू का एक प्रचलित स्वरूप रहा है।

चीन के यूनान प्रांत के "वेस्ट टाउन" में जब हैजा की महामारी फैली तो लोग अनेकानेक धार्मिक-जादूई कृत्यों में भाग लेकर अपना बचाव कर सके।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि सफेद जादू सदैव ही समाज स्वीकृत होता है और इससे सम्पूर्ण समाज का लाभ होता है।

काला जादू सिद्धान्ततः सदैव ही अनिष्टकारी होता है। इसके उपयोग से जादूगर समाज के सदस्यों को हानि पहुँचाता है। किसी को बीमार करने के लिए किया जानेवाला जादू "काला" जादू होता है। यह जादू परिस्थितियों के अनुसार कभी तो समाज सम्मत होता है और कभी असम्मत।

काले जादू के अन्तर्गत "सॉसरि" (जादू-टोना) तथा "विचक्राफ्ट" आते हैं। सॉसरि में वे क्रियाएँ एवं मन्त्र आते हैं जो सांस्कृतिक मत के अनुसार अपनी सामर्थ्य के लिए जादूगर को अपनी अलौकिक शक्ति पर निर्भर नहीं करते हैं। इस प्रकार "सॉसरि" किसी भी व्यक्ति द्वारा सीखी जा सकती है और कुशलतापूर्वक व्यवहार में लायी जा सकती है। दूसरी ओर "विचक्राफ्ट" ऐसा काला जादू है जिसके बारे में सोचा जाता है कि वह जादूगर की अलौकिक शक्ति पर निर्भर करता है। इस प्रकार यह

11. बी. मेलिनॉस्की, "कल्चर एज ए डिटरमिनेन्ट विहेवियर", फैक्टर्स डिटरमाइनिंग ह्यूमन विहेवियर में उद्धृत, 1937, पृष्ठ 157

12. वही, पृष्ठ 158

वंशानुगत ढंग से ही किसी अन्य तक पहुँच सकता है, इसे सिखाया नहीं जा सकता।[13]

पश्चिमी प्रशान्त महासागर के 'डोबुओं' में काले जादू का प्रयोग साम्पत्तिक अधिकारों की रक्षा के लिए और इस कारण चोरी के लिए दण्डित करने के लिए किया जाता है। *फोर्चून महोदय* के अनुसार "यहाँ यह माना जाता है कि प्रत्येक बीमारी किसी टैबू के कारण होती है। टैबू एक प्रकार का मन्त्र है जो अत्यन्त ही भद्दे रूप में दूषित घृणा को अभिव्यक्त करता है जिसमें कि बीमार कर देने का सामर्थ्य होता है। प्रत्येक रोग के अपने टैबू या मन्त्र होते हैं। प्रत्येक स्त्री और पुरुष एक से पाँच तक टैबू जानते हैं– मैंने टेवारा में टैबूओं और उनके जानकारों की गणना की थी– सभी को यह भी पता होता है कि कौन व्यक्ति कौन से टैबू जानता है।"[14]

न्यूजीलैण्ड के माओरी सरदारों की सत्ता उनके काले जादू पर नियन्त्रण द्वारा पुनर्बलित होती है। ऐसी ही स्थिति अफ्रीका में भी पायी जाती है। काला जादू लगभग सभी भारतीय जनजातियों में पाया जाता है।

निष्कर्ष

इस अध्याय में यह दर्शाया गया है, कि धर्म एवं जादू दोनों का सम्बन्ध अज्ञात जगत् में विद्यमान, अज्ञात शक्ति से होता है। धर्म एवं जादू दोनों में कुछ विशिष्ट प्रविधियों एवं विधियों की सहायता से इस अज्ञात शक्ति से सहायता की याचना की जाती है। धर्म एवं जादू में कई समानताओं एवं विभिन्नताओं के चिन्ह हैं। जादू के अनेक प्रकार हैं जिनका उपयोग लोग अपने सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश के अनुसार करते हैं।

❖

13. एम. एच. विलसन, "विच विलिफ्स ऐण्ड सोशल स्ट्रक्चर, *अमेरिकलन जर्नल ऑफ सोशियालॉजी*, वाल्यूम 56, पृष्ठ 307-317

14. आर. एफ. फारचून, *सॉसेरर्स ऑफ डोबु*, जार्ज रूटलेग, लन्दन, 1932, पृष्ठ 138